डॉ.रामप्रकाशजी के काव्य मे आधुनिक यथार्थवाद

डॉ.निभा शांतीलाल उपाध्याय
हिंदी विभाग
श्रीमती रा.दे.गो.महिला महाविद्यालय,
अकोला

प्रस्तावना :

वर्तमान युग संचार क्रांति का युग है, चहुओर यंत्रो का बोलबाला है ऐसे मे यंत्रीकृत हो रहे मानव जीवन शैली के यथार्थ को कवि ने अपने काव्य मे व्यक्त किया है । आज मनुष्य भौतिक संसाधनो में सुख तलाश रहा है जबकी वह जानता है की, सच्चा सुख संसाधनो मे नही फिर भी जीवन मुल्यो को दांव पर लगाकर संसाधनो की ओर भाग रहा है । नित्य प्रतिदिन हो रही आवश्यकताओ की वृध्दी की परीपुर्ति मे लगा यह मानव समाज रिश्तो की गहराईयो से दूर होता जा रहा है । अपने तो है पर अपनापन खोता नजर आ रहा है । बस जिंदगी ढो रहा है । जिंदगी के कुछ ऐसे ही कडवे सच समेटते हुए यह कवि का काव्य संग्रह अपने आप में एक अनुठा साहित्य है । यंत्रिकीकरण की दुनिया में यंत्रिकृत हो रहे समाज को फिर से यथार्थ की धरातल पर लाने का प्रयास कवि ने अपने काव्य संग्रह मे किया है । साहित्य समाज का पथप्रदर्शक माना जाता है । जब-जब मानव समाज यथार्थ से दुर जाता है तब तब साहित्य उसे दिशा देकर दशा सुधारने का प्रयास करता है । कवि रामप्रकाशजी के काव्यकृतियों में आधुनिक यथार्थ पर प्रकाश डालने से पुर्व कवि का संक्षिप्त परिचय आवश्यक है जो इस प्रकार है ।

कवि डॉ.रामप्रकाशजी का संक्षिप्त जीवन परिचय :

कवि का जन्म १५ ऑगस्त १९५४ को रामपुर खरही नामक ग्राम उन्नाव जिल्हा उत्तर प्रदेश मे हुआ । आपकी शिक्षा एम.ए.पी.एच.डी. है । आप वर्तमान मे अकोला शहर महाराष्ट्र के निवासी है । आप शिक्षक पद मे सेवा प्रदान करते हुए सेवा निवृत्त हो चुके है किंतु आज भी शिक्षा और समाज से जुडे है और सतत साहित्य सृजन का कार्य कर रहे है । आपको महाराष्ट्र शासन का वर्ष २०१२ का राज्य शिक्षक पुरस्कार का सम्मान भी प्राप्त हुआ । आपकी प्रसिध्द काव्य रचना **सूपभर रोशनी** को महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का संत नामदेव पुरस्कार प्राप्त हुआ । आपका साहित्यिक योगदान इस प्रकार है ।

१) भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र (समीक्षा)
२) सच्ची पुजा (लोककथाएँ)
३) सूपभर रोशनी (कविता संग्रह)
४) लहरो के विरुध्द (कविता संग्रह)
५) नई सुबह सिराहने पर (कविता संग्रह)
६) रुकू क्यों पथ कर चुकाने (गीत संग्रह)
७) सडक पर सांड

इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्रपत्रिकाओं में कविताएँ, लघु कथाएँ, यात्रा वर्णन, संस्मरण, समिक्षाएँ प्रकाशित है । इस प्रकार आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी सफल साहित्यकार है । जिन्होने गद्य और पद्य दोनो ओर लेखनी चलाई है ।

कवि रामप्रकाशजी के काव्य में आधुनिक यथार्थ :

आधुनिक युग संचार क्रांती का युग है । तंत्रज्ञान का बोलबाला है । ऐसे मे इस यांत्रिक युग में मानवीय भावनाओ को संजोये रखना और नैतिक मुल्यो के साथ जीवनयापन करना कठीन होते जा रहा है । भौतीक संसाधनो के पिछे दौडती दुनिया में रिश्तो की अहमियत कम होती नजर आ रही है । वही संसाधनो की भीड में मानव मानव से दूर होता जा रहा है । ऐसे मे कवि

का काव्य संग्रह मानव को मानवता से जुडे रहने की दिशा देने का कार्य कर रही है । कवि के काव्य में विद्यमान आधुनिक यथार्थ को निम्न बिंदुओ के तहत स्पष्ट किया जा सकता है ।

१) अतिथियो के प्रति अपनेपन के भाव का विलुप्तीकरण का चित्रण :

आज के इस दौर में मनुष्य को मेहमनो के प्रति अपनेपन का वह भाव नही आ रहा जो पहले किसी जमाने मे देखने को मिलता था । आज तो महज औपचारिकताएँ शेष रह गई है । इसलिए कवि कहते है कि -

ढूंढो उस आदमी को
जो २ बजे रात को
बडे उछाह के साथ
पहुँचकर खडा रहता है
रेल्वे प्लेटफार्म पर
अतिथियों को लाने के लिए
(अतिथिदेवो भव कविता से पृष्ठ ५ कविता संग्रह नई सुबह सिरहाने)

२) पूंजीवाद पर व्यंग्य :

वर्तमान युग मे भी पूंजीवाद जमकर फल-फुल रहा है। कई रोटियाँ बंद डिब्बो में खानेवालो का इंतजार कर रही है तो कई खाने के लिए तडपनेवाले रोटियो के इंतजार मे है । कहाँ से रोज के लिए रोटी लाये । ऐसी विषम स्थिती आज भी देखने को मिलती है । इसलिए कवि कहते है ।

प्लेटफार्म पर रेलगाडी के रुकने पर
रोटी माँगते हुए बच्चे के सामने
अचानक आ जाता वातानुकुलित डिब्बा
वह भाग लेता है वहाँ से सरपट
उसे बखूबी पता है
कहाँ मिलती है झिडकियाँ
और कहाँ रोटियाँ (रोटियाँ, नई सुबह सिराहने पर, पृष्ठ-१६)

३) वर्तमान व्यवस्था पर व्यंग्य :

कवि मे वर्तमान व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है । कवि ने भारतीय रेल्वे पर दृष्टि डाली है । जैसा की हम सभी जानते है कि, हमारी देश में गरीबी और बेरोजगारी की समस्या जटील है, ऐसे मे काम की तलाश में एक बडा जनसमुदाय एक स्थान से दुसरे स्थान जाने के लिए रेल्वे को माध्यम बनाता है और एक लंबी रेल मे महज दो डिब्बे सामान्य होते है । बिना आरक्षण के ऐसे मे प्लेटफार्म के भीड का सैलाब उन दो डिब्बो मे घुसने के लिए जो धक्का-मुक्की करता है । कवि ने उसे इस तरह अपनी कविता का विषय बनाया है ।

प्लेटफार्म पर भीड का उमडा सैलाब
गाडी आनेपर, गहमागहमी, धक्का-मुक्की
आगेवालो को ढकेलते हुए,
धक्का देकर ठेलते हुए लोग
सबका एक लक्ष्य
घुस जाएँ किसी तरह डिब्बे के भीतर
पसीने से तरबतर
हॉफते हुए
बुढे-बाढे कांपते हुए

केवल दो डिब्बो मे समा जाना चाहती है यह दुनिया
(रेलगाडी का सामान्य डिब्बा, पृष्ठ ३०, नई सुबह सिरहाने पर)

४) मानवीय रिश्तो मे लुप्त हो रहा अपनापन :

आज के इस भाग-दौड भरी जिंदगी में मनुष्य अपने रिश्ते की गहराई को भावनाओ से नही बल्कि उपयोगिता से तोलने लगा है । शायद इसलिए ही वृध्दाश्रम व अनाथआश्रम की संख्या तेजी से बढ रही है । जिसे देखते हुए कवि कहते है,

अ) अब आदमी विचारो, भावों या उम्र से नही
अर्थशास्त्र के **उपयोगिता ह्रास नियम** के तराजू से तौले जाते है
(नई सुबह सिरहाने पर कविता संग्रह से, पृष्ठ ५३, चलन)

ब) माना कि बटन दबाते ही
जल उठती है बत्तीयाँ
पर सच यह भी तो है
कि बटन दताबे ही
नही बना करता है खून अथवा खून के रिश्ते
(नई सुबह सिरहाने पर कविता संग्रह से, पृष्ठ २५, चलन)

५) पेयजल समस्या का चित्रण :

वर्तमान समय मे पर्यावरण की समस्या दिन-प्रतिदिन जटिल होती नजर आ रही है । फिर चाहे शुध्द ऑक्सीजन हो या जल, आज पेयजल समस्या एक जटिल समस्या है । गाँव हो या शहर हर जगह पेयजल की समस्या दिखाई दे रही है । ऐसे में कवि का ध्यान भी इस ओर गया है और इस संबंध मे वे लिखते है -

हर पंद्रह दिनो बाद
महिने मे दो बार आता है
नलो मे पानी
चहक उठती है
पाँच लाख की बस्ती
दूर-दूर तक सडको, गलियों मे लग जाती है,
बर्तनो की कतारें
नल मे पानी आना एक उत्सव होता है
कोई मशीन लगाकर पानी खीच लेता है
कोई दो घडे पानी के लिए रोता है ।
(लहरो के विरुध्द, पृष्ठ ८६, जिस दिन नल आता है कविता से)

६) कन्या भ्रुण हत्या की पीडा की अभिव्यक्ति :

वर्तमान प्ररिवेश मे समाज का एक परिदृश्य ऐसा भी देखने को मिल रहा है जहाँ लोग पुत्र मोह में कन्या भ्रुण हत्या जैसा घ्रणित अपराध कर रहे है । जिसके परिणामस्वरुप समाज में स्त्री-पुरुष अनुपात का संतुलन बिगड रहा है । जिसे दूर करना आवश्यक है । ऐसे मे उस भ्रुण की पीडा को कवि ने अपनी कविता में इस तरह व्यक्त किया है ।

पापा मुझको आने दो
मम्मी मुझको आने दो
एक अजन्मी बिटियाँ को
मन की बाते कह जाने दो
सच कहती हूँ मम्मी मै भी कुछ बनके दिखलाऊंगी

पापा यह विश्वास करो मै कुल का नाम बढाऊंगी
ये बातें तो पीछे, पहले दुनिया में आ जाने दो
पापा मुझको आने दो
मम्मी मुझको आने दो

(रुकूं क्यों पथ कर चुकाने, पृष्ठ ५२)

७) कृषक जीवन की समस्या का चित्रण :

भारत हमारा कृषि प्रधान देश है । स्वतंत्रता के पश्चात हमारे देश ने कृषि क्षेत्र मे प्रगति हेतु नित नये नये कृषि संयंत्रो का निर्माण किया है । अधिक उत्पादन हेतु नित नये योजनाये बनाये गये किंतु फिर भी आजतक किसानो की मुलभुत समस्याओं को सुलझाया नही गया । किसान परिस्थितियों के हाथो मजबुर होकर आत्महत्या कर बैठते है । आये दिन समाचार पत्रो में ऐसे समाचार पढने को मिलते है जिससे हृदय अधिर हो उठता है । वास्तव मे देखा जाये तो किसान कोई दया नही चाहता वह तो अपनी मेहनत से उत्पन्न फसल की उचित किंमत चाहता है, पर होता ऐसा है की, किसान की फसल आते ही कीमत कम हो जाती है । कभी कभी किसान की मेहनत और लागत भी नही निकल पाती । ऐसे मे उन्हे अपने माल फेकने पढ जाते है । ऐसे मे उनका दु:खी मन क्या करे । उनकी पीडा को कवि ने अपने काव्य मे कुछ ऐसे व्यक्त किया है -

ओ संसद !
मै मरना नही चाहता था
मै मरना नही चाहता हुँ
पर जब भी तैयार होती है
खून पसीना पैसा लगाकर फसले
गिर जाते है भाव
पिछले साल फेकने पडे थे आलू
इस साल प्याज और टमाटर
हमे मत दो अनुदान
हमे मत दो सम्मान
दे सको तो दो
हमारे पसीने के दाम
हमारी फसलो के दाम (सडक पर सांड, पृष्ठ २२)

८) भौतिक संसाधनो की दासता :

वर्तमान समय मे मानव समाज भौतिक संसाधनो का गुलाम बनते जा रहा है। एक दिन यदि बिजली की छुट्टी हो जाये, परिवहन संसाधनो मे हडताल हो जाये, मोबाईल सेवा उपलब्ध न हो तो जिंदगी शून्य लगने लगती है । इन्ही भावो को संजोये कवि की ये पंक्तियाँ -

बिजली की छुट्टी पर
नल की हडताल पर
वाहनो के रुठ जाने पर
टी.व्ही. के नाराज होने पर
दो घंटे के लिए मोबाइल चले जाने पर
सुन्न हो जाता है दिल-दिमाग (सडक पर सांड, पृष्ठ १३५)

इस प्रकार कवि ने अपने काव्य में आधुनिक युग के सच को अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

निष्कर्ष :

कवि डॉ.रामप्रकाश के काव्य में आधुनिक यथार्थ चित्र स्पष्ट दिखाई दे रहा है। आज के इस प्रगतीशिल युग की समस्याओं पर लेखक ने दृष्टि डाली है । सहज, सरल शब्दो मे लिखी आपकी कविताऐं जिंदगी के अधिक निकट नजर आती है । आज जनजीवन से जुडी ये कविताये जीवन का सच प्रगट कर रही है । वर्तमान जीवनशैली का प्रतिबिंब इन कविताओ में विद्यमान है । वर्तमान समय की विविध समस्याओं को भी कवि ने बखुबी व्यक्त किया है । कवि ने अपनी कविता में प्रेम, स्नेह, मानवता, आस्था, अनुभुति, करुणा आदि जीवन मूल्यो को अभिव्यक्त किया है। मानव जिस समाज मे रहता है वहाँ उसे समाज से जोडने की, यह नैतिक मूल्य ही सशक्त कडी है । आज आधुनिक युग का सच ही आपके कविता का आधार है । इस संबंध में केदारनाथ अग्रवाल का कथन सटिक जान पडता है - **अब हिंदी की कविता न रस की प्यासी है, न अलंकार की इच्छुक है और न संगीत की तुकांत पदावली की भूखी है । अब वह चाहती है, किसान की वाणी, मजदूर की वाणी और जन-जन की वाणी** आज के इस तंत्रज्ञान के युग मे साहित्य जीवन और जगत की, व्यवहारीक अनुभुती का पर्याय बन गई है । इस दृष्टी से कवि का काव्य सटिक जान पडता है । आपका काव्य जनसामान्य का काव्य है जो केवल दशा का चित्रण ही नही करती बल्कि देने कार्य भी कर रही है ।

आपका साहित्य हिंदी साहित्य जगत की अमुल्य धरोहर है । जो भावी पीढी के विकास के लिए दिशा निर्देशक ठहरती है । आप एक ऐसे साहित्यकार है जो समाज के आंतरीक एवं बाह्य प्रतिबिंब को अपनी रचना मे उतार लाये है । आपका साहित्यिक योगदान साहित्य जगत मे सराहनीय है ।

संदर्भ ग्रंथसुची

१) डॉ.रामप्रकाशजी के काव्य संग्रह
२) छायावादोत्तर हिंदी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि - लेखक डॉ.कमलाप्रसाद पांडेय

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com